टोपी शुक्ला

पूर्व वर्षों के प्रश्नोत्तर
2016
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 1.

जीवन मूल्यों के आधार पर इफ़्फ़न और टोपी शुक्ला के संबंधों की समीक्षा कीजिए।

Answer:

टोपी और इफ़्फ़न घनिष्ठ मित्र थे। इफ़्फ़न टोपी का पहला दोस्त था। टोपी के बिना इफ़्फ़न और इफ़्फ़न के बिना टोपी न केवल अधूरे थे, बल्कि बेमानी थे। उनकी दोस्ती धर्म और जाति की दीवारों से परे थी। वे एक दूसरे की परछाई नहीं थे, फिर भी वे मित्रता की एक अटूट डोर से बँधे थे। अलग धर्म, जाति एवं भिन्न संस्कृति के बावजूद टोपी को जो स्नेह और अपनापन इफ़्फ़न और उसकी दादी से मिला, वैसा स्नेह, संरक्षण तो उसे अपने भरे-पूरे घर में किसी से नहीं मिला। जिस भाषा के कारण इफ़्फ़न की दादी टोपी से प्यार करती थी। टोपी की वही भाषा उसके अपने घर में निकृष्ट समझी जाती थी। टोपी के भाई टोपी को एहसास दिलाते थे कि वह बेहद छोटा और तुच्छ है, जबकि कलेक्टर का बेटा होने के बावजूद इफ़्फ़न उससे समानता का व्यवहार करता था, उससे अपने मन की बात करता था। वास्तव में प्रेम, मित्रता जैसे भाव जाति या धर्म के आधार पर पैदा नहीं होते, वे पैदा होते हैं सहानुभूति से, भाईचारे की भावना से, त्याग और समर्पण जैसे जीवन मूल्यों से, जिसने इफ़्फ़न और टोपी की मित्रता को मित्रता की पराकाष्ठा तक पहुँचा दिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 2.

घर वालों के मना करने पर भी टोपी का लगाव इफ़्फ़न के घर और उसकी दादी से क्यों था? दोनों के अनजान, अटूट रिश्ते के बारे में मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अपने विचार लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

टोपी एक सुविधा-संपन्न परिवार से था, फिर भी इफ़्फ़न की हवेली की तरफ़ वह बरबस खिंचा चला जाता था क्योंकि अपने भरे-पूरे घर में वह बिल्कुल अकेला था। उसकी भावनाओं को घर में कोइ नहीं समझता था। इसके विपरीत अलग धर्म, जाति और भिन्न संस्कृति के बावजूद जो स्नेह और अपनापन उसे इफ़्फ़न और उसकी दादी से मिलता था वैसा स्नेह, संरक्षण तो उसे अपने भरे-पूरे घर में कभी किसी से नहीं मिला था। जिस भाषा के कारण इफ़्फ़न की दादी टोपी से प्यार करती थी। उसी भाषा के कारण उसकी स्वयं की दादी उसे निकृष्ट समझती थी। टोपी के भाई, टोपी को एहसास दिलाते थे कि वह छोटा और तुच्छ है,

जबकि कलेक्टर का बेटा होने के बावजूद इफ़्फ़न उससे समानता का व्यवहार करता था। उससे अपने मन की बात करता था। वास्तव में, उनकी मित्रता धर्म और जाति की दीवारों से परे थी। एक दूसरे के बिना वे न केवल अधूरे थे, बल्कि बेमानी थे। मित्रता का ऐसा भाव त्याग, समर्पण और भाईचारे की भावना से ही पैदा हो सकता है। इफ़्फ़न और टोपी का अटूट रिश्ता ऐसे ही मानवीय मूल्यों पर टिका है।

Question 3.

एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा? मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अपने विचार लिखिए।

Answer:

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को अनेक भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। वह अकेला पड़ गया था क्योंकि उसके दोस्त दसवीं कक्षा में थे और नई कक्षा में से कोई उसका दोस्त न बन सका था। वह अध्यापकों की हँसी का पात्र बनता चला गया। अध्यापक जब भी किसी न पढ़ने वाले बच्चे को टोकते तो हमेशा उसी का उदाहरण देते, 'क्यों क्या बात है? राम अवतार (या कोई भी बच्चा) बलभद्र की तरह इसी दर्जे में टिके रहना चाहते हो। इस पर वह शर्म से बिल्कुल पानी-पानी हो जाता और बाकी बच्चे ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगते। अपनी कक्षा में वह अच्छा खासा बूढ़ा नज़र आता था। अपने भरे-पूरे घर की तरह अब वह स्कूल में भी बिल्कुल अकेला हो गया था।

मानवीय मूल्यों की दृष्टि से देखा जाए, तो किसी की भावनाओं को इस प्रकार से ठेस पहुँचाना, उसे प्रताड़ित करना सर्वथा अनुचित है। ऐसे समय में माता-पिता ही नहीं समाज और शिक्षकवर्ग सभी को एक सकारात्मक भूमिका निभानी पड़ेगी। सफलता या असफलता जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है। किसी एक परीक्षा में असफल होने से हमारा जीवन रुकता नहीं, वहाँ से तो जीवन को एक नई दिशा और अधिक सुदृढ़ता के साथ देने की आवश्यकता है। आज विद्यार्थियों के दिलों-दिमाग़ में यह बात और अधिक सुदृढ़ता से स्थापित करने की आवश्यकता है। तभी परीक्षा परिणामों के बाद होने वाली आत्महत्याओं को रोकने में समाज एक सकारात्मक पहल कर सकेगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2015
दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 4.

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को किन भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा होगा? उसकी भावनात्मक परेशानियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में आपके विचार से क्या परिवर्तन होने चाहिए? तर्क-सहित उत्तर दीजिए।

Answer:

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। एक ही कक्षा में दो-दो बार बैठने से टोपी को अनेक भावनात्मक चुनौतियों का सामना करना पड़ा। मास्टर जी जब भी किसी कमज़ोर लड़के को समझाते तो टोपी का ही उदाहरण देते थे। कहते कि 'क्या बात है राम अवतार (या कोई भी बच्चा) बलभद्र की तरह इसी दर्जे में टिके रहना चाहते हो? मास्टर जी के ऐसा कहते ही सभी ज़ोरों से हँसने लगते। हँसने वाले वे होते, जो पिछले उससे पीछे थे। अगले साल भी उसे उसी कक्षा में बैठना पड़ा, तो वह बिल्कुल ही मिट्टी का लौंदा हो गया क्योंकि अब उसका कोई दोस्त उसकी कक्षा में तो क्या उससे अगली कक्षा में भी नहीं था। आठवीं कक्षा वाले दसवीं में थे, तो सातवीं वाले बच्चे उसके साथ थे। उनके बीच बैठा हुआ वह अच्छा खासा बूढ़ा

(बड़ा) नज़र आता था। अपने भरे-पूरे घर की तरह अब वह स्कूल में भी अकेला हो गया था। मास्टरों ने भी उस पर ध्यान देना छोड़ दिया था। उससे कक्षा में कोई सबाल न पूछा जाता था। कई लड़के ऐसे-ऐसे कटाक्ष करते कि वह बिलबिला उठता। घर में भी दादी, माँ, भाई आदि के तीखे बाण उसे सहने पड़ते।' टोपी जैसे बालकों की भावनात्मक परेशानियों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा-व्यवस्था में जो आवश्यक बदलाव होने चाहिए, उनमें प्रमुख हैं– टोपी जैसी भावनात्मक परेशानियों से पीड़ित विद्यार्थियों पर माता-पिता तथा शिक्षकगण विशेष ध्यान दें। उनके साथ माता-पिता तथा शिक्षकों का सहानुभूति तथा प्यार भरा उपचारात्मक व्यवहार होना चाहिए। विद्यालयों में हतोत्साहित करने के स्थान पर बालक को उत्साहित करना चाहिए। सफलता और असफलता दोनों ही जीवन के पहलू हैं, यह उन्हें समझाया जाना चाहिए। शिक्षा के लिए विशेष प्रबंध होना चाहिए, जैसे– उपचारात्मक शिक्षा प्रणाली, वस्तुनिष्ठ प्रश्नावली तथा दिलचस्पी से पढ़े जाने वाले विषय उन्हें पढ़ाए जाने चाहिए। साथ ही वैकल्पिक शिक्षा की ओर भी रुझान होना चाहिए।

Question 5.

'अलग-अलग धर्म और जाति मानवीय रिश्तों में बाधक नहीं होते।' 'टोपी शुक्ला' पाठ के आलोक में प्रतिपादित कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'अलग-अलग धर्म और जाति मानवीय रिश्तों में बाधक नहीं होते।' लेखक डॉ० राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यास 'टोपी शुक्ला' में इसी विचारधारा को प्रतिपादित किया है। लेखक ने बताया है कि टोपी कट्टर हिंदू परिवार से तथा इफ़्फ़न कट्टर मौलवी परिवार से संबंध रखता था, किंतु फिर भी टोपी और इफ़्फन की दादी में एक अटूट मानवीय रिश्ता था। दोनों आपस में स्नेह के बंधन में बँधे थे। टोपी अपने घर में उपेक्षित था उसे इफ़्फ़न के घर में अपनापन मिलता था। दादी के आँचल की छाँव में बैठकर वह स्नेह का अपार भंडार पाता था। उसके लिए रीति-रिवाज, सामाजिक हैसियत, खान-पान आदि कोई महत्त्व नहीं रखता था। इफ़्फ़न की दादी भी भरे घर में अकेली थी, उनकी भावनाओं को समझने वाला भी घर में कोई नहीं था। अतः दोनों का रिश्ता धर्म और जाति की सीमाएँ पार कर प्रेम के बंधन में बँध गया। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे थे। लेखक ने हमें समझाया है कि जब मन की भावनाएँ मेल खा जाती हैं तो मज़हब और जाति के बंधन बेमानी हो जाते हैं। अतः स्पष्ट हो जाता है कि टोपी व इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के होने पर भी परस्पर प्रेम व स्नेह की अदृश्य डोर मे बँधे हुए थे।

2014
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 6.

टोपी एक सुविधा-संपन्न परिवार से था, फिर भी इफ़्फ़न की हवेली की तरफ उसके खिंचे चले जाने के क्या कारण थे? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

टोपी एक सुविधा-संपन्न परिवार से था, फिर भी इफ़्फ़न की हवेली की तरफ़ वह बरबस खिंचा चला जाता था क्योंकि अपने भरे-पूरे घर में वह बिल्कुल अकेला था। उसकी भावनाओं को घर में कोई नहीं समझता था। दादी तो उसकी हर बात में कमी निकालती थीं। दादी उसकी भाषा पर भी उसे डाँटती थीं। माँ को उसकी इफ़्फ़न से दोस्ती पर नाराज़गी थी। बड़े भाई मुन्नी बाबू ने भी स्वयं कबाब खाकर उसका इल्ज़ाम टोपी पर लगाकर उसकी पिटाई करवा दी थी। छोटा भाई भैरव भी अक्सर उसे तंग करता रहता था। इन सबके विपरीत इफ़्फ़न और उसकी दादी से उसे अपनेपन का एहसास मिलता था। दादी तो उसे बहुत प्यार करती थी। वह जब भी इफ़्फ़न के घर जाता, दादी के पास ही बैठता था। टोपी की पूरबी बोली पर यदि इफ़्फ़न के परिवार का कोई सदस्य उसे छेड़ता, तो भी दादी टोपी का ही पक्ष लेती थीं। वे स्वयं भी पूरबी बोली बोलती थीं और इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी कहानियाँ सुनाया करती थीं। इसी कारण टोपी ने बार-बार मना करने पर भी इफ़्फ़न की हवेली में जाना नहीं छोड़ा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 7.

'टोपी शुक्ला' पाठ में इफ़्फ़न की दादी के स्वभाव की उन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए जिनके कारण टोपी ने दादी बदलने की बात कही?

Answer:

इफ़्फ़न की दादी स्नेहिल स्वभाव की थी। वह बच्चों से अत्यधिक स्नेह करती थीं। वह इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी अपने पास बैठाकर कहानियाँ सुनाती थीं। यहाँ तक कि इफ़्फ़न के परिवार का कोई सदस्य कभी टोपी को उसकी बोली पर छेड़ता जब भी वह टोपी का ही पक्ष लेती थीं। टोपी की भाँति वह भी पूरबी बोली बोलती थीं जिससे टोपी को उनसे अपनेपन का एहसास होता था। जबकि टोपी की दादी का स्वभाव अच्छा न था। वह हमेशा टोपी को डाँटती-फटकारती रहती थीं। वह परंपराओं में बँधे होने के कारण कट्टर हिंदू थीं। वह टोपी को इफ़्फ़न के घर जाने से भी रोकती थीं। इन्हीं सब कारणों से टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही।

Question 8.

टोपी ने मुन्नी बाबू के बारे में कौन-सा रहस्य छिपाकर रखा था और क्यों? विस्तार से समझाइए।

Answer:

एक बार टोपी ने मुन्नी बाबू को रहीम कबाबची की दुकान पर कबाब खाते देख लिया था, इस बात को छुपाने के लिए मुन्नी बाबू ने टोपी को इकन्नी की रिश्वत भी दी थी। इस रिश्वत का तो टोपी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, किंतु टोपी चुगलखोर नहीं था इसीलिए उसने अपने घरवालों को इसकी जानकारी नहीं दी थी।

Question 9.

'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर बताइए कि इफ़्फ़न की दादी मिली-जुली संस्कृति में विश्वास क्यों रखती थीं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी नमाज़ व रोज़े की बड़ी पाबंद थीं, किंतु जब उनके बेटे यानी इफ़्फ़न के पिता के चेचक निकली तो वह उसके पलंग के पास एक पैर पर खड़ी हुई और उन्होंने माता का नाम लेकर कहा, "माता, मोरे बच्चे को माफ़ करद्यो।" उनकी ससुराल में उर्दू बोली जाती थी, किंतु वे पूरबी बोली ही बोलती थीं। कट्टर मौलवी परिवार में गाने-बजाने की रोक थी, किंतु इफ़्फ़न की छठी में उन्होंने खूब गाना बजाना किया था। इस सब बातों से सिद्ध होता हे कि वे मिली-जुली संस्कृति पर विश्वास करती थीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 10.

टोपी शुक्ला के घर की बूढ़ी नौकरानी को टोपी के प्रति प्रेम और सहानुभूति क्यों थी? कारण सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी की मृत्यु और इफ़्फ़न के मुरादाबाद चले जाने के बाद टोपी बिल्कुल अकेला पड़ गया था। घर के अन्य सदस्य उसकी भावनाओं को समझते नहीं थे। नए क्लेक्टर के लड़कों के साथ उसकी दोस्ती न हो सकी। अपना अकेलापन बाँटने के लिए उसे घर की बूढ़ी नौकरानी सीता ही दिखाई दी। सीता उसके दुख-दर्द को समझती थी। वह उसे सहारा देती तथा समझाती थी। सीता की छाया में जाकर टोपी की आत्मा भी छोटी हो गई थी। सीता की तरह उसे भी घर के सभी लोग डाँटते थे। डाँट-मार खाकर वह सीता के पास चला जाता था। उसके प्यार भरे दो बोल सुनकर उसे अपना दुख कम लगने लगता था।

'घायल की गति घायल जाने' की तरह वे दोनों एक दूसरे के दर्द, अकेलेपन और प्रताड़ना के दुख को समझते थे। ऐसी परिस्थितियों में घर की बूढ़ी नौकरानी सीता टोपी के प्रति विशेष प्रेम और सहानुभूति रखने लगी थी।

2013
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 11.

'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर बताइए कि टोपी को किन-किनसे अपनापन मिला? क्या आज के समय में भी ऐसे अपनेपन की प्राप्ति संभव है?

Answer:

टोपी को अपने मित्र इफ़्फ़न तथा उसकी दादी से और अपने घर पर नौकरानी सीता से बहुत अपनापन मिला। इस अपनत्व को पाकर अपने घर में उपेक्षित जीवन जी रहे, टोपी को एक सहारा मिला। इफ़्फ़न ने तो उसके जीवन की जैसे सारी कमियों को पूरा कर दिया था तथा उसकी दादी की ममतामयी बोली तो उसके दिल में उतर गई थी, वह इफ़्फ़न के घर जाकर दादी के पास ही बैठा करता था और अपने घर में जब घर के सब छोटे-बड़े उसे डाँट-फटकार लेते थे, तब वह सीता के पास अपना दुख बाँटने चला जाता था।

आज के युग में हर आदमी व्यस्त दिखाई देता है, इसी व्यस्तता ने उसकी संवेदनशीलता को भी कम कर दिया है। ऐसे में इतना अपनापन मिलना असंभव तो नहीं, किंतु कठिन अवश्य है। यहाँ यह कहना भी अनुचित नहीं होगा कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और उसके अंदर संवेदना अभी पूरी तरह ख़त्म नहीं हुई है, अतः टोपी के समान पारिवारिक उपेक्षा की पीड़ा झेल रहे व्यक्तियों को अपनत्व देने वाले आज भी कम नहीं हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 12.

किन बातों से पता चलता है कि टोपी को इफ़्फ़न की दादी बहुत प्रिय थी?

Answer:

टोपी को इफ़्फ़न की दादी बहुत प्रिय थी, ऐसा अनेक बातों से पता चलता है—

(*i*) टोपी इफ़्फ़न के घर जाकर दादी के पास ही बैठा करता था।

(*ii*) उसे उनकी बोली में मिठास महसूस होती थी।

(*iii*) इफ़्फ़न की दादी का निधन होने पर वह विद्यालय के जिमनेज़ियम में जाकर एक कोने में बैठकर बहुत रोया था।

(*iv*) दादी के न रहने पर उसे इफ़्फ़न का घर खाली-खाली महसूस हुआ था।

(*v*) उसने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही थी, जो दर्शाती है कि उसके मन में दादी के प्रति बहुत प्रेम था।

Question 13.

इफ़्फ़न की दादी की मौत का समाचार सुनकर टोपी पर क्या प्रभाव पड़ा? टोपी ने इफ़्फ़न को क्या कहकर सांत्वना दी?

Answer:

इफ़्फ़न की दादी की मौत का समाचार सुनकर टोपी का बालमन शोक से भर उठा। इफ़्फ़न तो उसी समय घर चला गया और टोपी जिमनेज़ियम में जाकर एक कोने में बैठकर रोने लगा। शाम को वह इफ़्फ़न के घर गया, तो एक दादी के न रहने से उसे सारा घर खाली-खाली-सा लगा। इफ़्फ़न की दादी के प्रति उसके मन में बहुत प्रेम था, बदले में ऐसा ही प्रेम उसे उनसे भी प्राप्त हुआ था, किंतु कभी ऐसी ममता उसे अपनी दादी से नहीं मिली थी। इसी कारण उसने इफ़्फ़न को यह कहकर सांत्वना दी कि 'तोरी दादी की जगह अगर हमरी दादी मर गई होती, 'त ठीक भया होता' अर्थात उसकी यानी इफ़्फ़न की दादी की जगह उसकी दादी मर गई होतीं, तो ठीक होता।

Question 14.

किन घटनाओं के कारण टोपी को कक्षा में शर्म आने लगी थी? उस स्थिति में आप होते तो क्या करते?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

टोपी को जब नवीं कक्षा में पहले व दूसरे साल फ़ेल होना पड़ा, तो परिवार के साथ-साथ विद्यालय में भी अध्यापकों ने उसकी उपेक्षा शुरू कर दी तथा नए सहपाठियों से भी उसे सहानुभूति नहीं मिल सकी। अंग्रेज़ी अध्यापक ने तो एक दिन उसके द्वारा उत्तर देने के लिए हाथ उठाने पर उससे यह तक कह दिया कि वह उन्हें अन्य विद्यार्थियों से प्रश्न पूछने दे, उससे तो वे अगले साल भी पूछ लेंगे। उनके इस कटाक्ष पर जब बच्चे हँसे, तो टोपी शर्म से पानी-पानी हो गया। कक्षा में उसके नए सहपाठी उससे बहुत छोटे थे और उनके बीच में वह बहुत बड़ा दिखाई देता था तथा वे उससे दूर ही रहना चाहते थे और मौका मिलने पर उसकी हँसी भी उड़ाते थे। इन्हीं सब कारणों से टोपी को कक्षा में शर्म आने लगी थी।

यदि मैं टोपी जैसी स्थिति में होता, तो चुभती हुई बातें कहने वाले अध्यापकों से बड़े ही विनम्रता के साथ विनती करता कि उनका ऐसा व्यवहार उसे बहुत आहत करता है। अतः वे उसपर व्यंग्य-बाण न चलाएँ और साथ-ही-साथ उन्हें आश्वासन देता कि उनके मार्गदर्शन में जी तोड़ मेहनत करके मैं उन्हें अच्छे अंक लाकर दिखाऊँगा।

Question 15.

टोपी और बूढ़ी नौकरानी दोनों में एक-दूसरे के प्रति सद्भाव होने का क्या कारण था? इनके व्यवहार से आपको क्या शिक्षा मिलती है?

Answer:

घर में टोपी और बूढ़ी नौकरानी दोनों की ही दशा एक जैसी थी। दोनों को ही घर के छोटे-बड़े सब डाँट-फटकार लेते थे। बूढ़ी नौकरानी सीता को तो यह सब चुपचाप सह लेने का अनुभव था। इसी कारण जब भी टोपी किसी बात पर दादी या घर के अन्य सदस्य का विरोध करता और उसे माँ रामदुलारी से पिटाई खानी पड़ती, तब सीता उसे अपनी कोठरी में ले जाकर समझाया करती थी। सीता के आँचल में जाकर टोपी को भी सुकून मिलता था। इनके व्यवहार से हमें यह शिक्षा मिलती है कि पीड़ा या कष्ट की स्थिति में एक-दूसरे का सहारा बनने से एक संबल मिलता है। इस प्रकार व्यक्ति को लगता है कि कोई तो है जो हमारे साथ है और जिससे वह अपना दुख-दर्द बाँट सकता है।

Question 16.

ठाकुर हरिनाम सिंह कौन था? उसके लड़कों ने टोपी शुक्ला से दोस्ती क्यों नहीं की? यह उनकी किस भावना का व्यंजक है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

ठाकुर हरिनाम सिंह को इफ़्फ़न के पिता के तबादले के बाद बनारस का नया कलेक्टर बनाया गया था। ठाकुर हरिनाम सिंह के लड़के इफ़्फ़न के समान सभ्य नहीं थे, उन्हें अपने पिता के कलेक्टर होने का घमंड था। इसी घमंडी मानसिकता के चलते उन्हें टोपी अपने किसी चपरासी के बेटे के समान लगा, उन्होंने दोस्ती करने आए टोपी के साथ बहुत दुर्व्यवहार किया और बाद में अपने अलसेशियन कुत्ते से कटवा दिया। यह उनकी अपने आप को ऊँचा तथा दूसरों को तुच्छ समझने की दूषित भावना का व्यंजक है।

Question 17.

इफ़्फ़न की दादी को मरने से पहले कौन-सी वस्तुएँ याद आईं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी पूरा जीवन अपने मायके से जुड़ी यादों को दिल में सहेजे रही थीं। इसलिए मरने से पहले उन्हें अपने मायके की कच्ची हवेली, अपने द्वारा लगाया गया आम का बीजू पेड़ आदि याद आए।

वे अपने मायके की मिट्टी से भावात्मक रूप से जुड़ी थीं। इसी समय जब उनके बेटे यानी इफ़्फ़न के पिता सय्यद मुरतुज़ा हुसैन ने उनसे यह पूछा कि मरने के बाद लाश करबला जाएगी या नज़फ़, तो इस बात पर वे भड़ककर कहने लगीं कि यदि उससे उनकी लाश न सँभाली जाए, तो उनके मायके भेज दे।

Question 18.

टोपी के भरे-पूरे परिवार में सभी प्रकार की सुविधाएँ थीं, फिर भी वह इफ़्फ़न की हवेली की तरफ़ क्यों खिंचा चला जाता था? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

टोपी एक सुविधा-संपन्न परिवार से था, फिर भी इफ़्फ़न की हवेली की तरफ़ वह बरबस खिंचा चला जाता था क्योंकि अपने भरे-पूरे घर में वह बिल्कुल अकेला था। उसकी भावनाओं को घर में कोई नहीं समझता था। दादी तो उसकी हर बात में कमी निकालती थीं। दादी उसकी भाषा पर भी उसे डाँटती थीं। माँ को उसकी इफ़्फ़न से दोस्ती पर नाराज़गी थी। बड़े भाई मुन्नी बाबू ने भी स्वयं कबाब खाकर उसका इल्ज़ाम टोपी पर लगाकर उसकी पिटाई करवा दी थी। छोटा भाई भैरव भी अक्सर उसे तंग करता रहता था। इन सबके विपरीत इफ़्फ़न और उसकी दादी से उसे अपनेपन का एहसास मिलता था। दादी तो उसे बहुत प्यार करती थी। वह जब भी इफ़्फ़न के घर जाता, दादी के पास ही बैठता था। टोपी की पूरबी बोली पर यदि इफ़्फ़न के परिवार का कोई सदस्य उसे छेड़ता, तो भी दादी टोपी का ही पक्ष लेती थीं। वे स्वयं भी पूरबी बोली बोलती थीं और इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी कहानियाँ सुनाया करती थीं। इसी कारण टोपी ने बार-बार मना करने पर भी इफ़्फ़न की हवेली में जाना नहीं छोड़ा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 19.

टोपी ने मुन्नी बाबू की किस असलियत से घर वालों से छिपाकर रखा था, और क्यों?

Answer:

एक बार टोपी ने मुन्नी बाबू को रहीम कबाबची की दुकान पर कबाब खाते देख लिया था, इस बात को छुपाने के लिए मुन्नी बाबू ने टोपी को इकन्नी की रिश्वत भी दी थी। इस रिश्वत का तो टोपी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, किंतु टोपी चुगलखोर नहीं था इसीलिए उसने अपने घरवालों को इसकी जानकारी नहीं दी थी।

Question 20.

कैसे कहा जा सकता है कि इफ़्फ़न की दादी मिली-जुली संस्कृति में विश्वास रखने वाली महिला थीं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी नमाज़ व रोज़े की बड़ी पाबंद थीं, किंतु जब उनके बेटे यानी इफ़्फ़न के पिता के चेचक निकली तो वह उसके पलंग के पास एक पैर पर खड़ी हुई और उन्होंने माता का नाम लेकर कहा, "माता, मोरे बच्चे को माफ़ करद्यो।" उनकी ससुराल में उर्दू बोली जाती थी, किंतु वे पूरबी बोली ही बोलती थीं। कट्टर मौलवी परिवार में गाने-बजाने की रोक थी, किंतु इफ़्फ़न की छठी में उन्होंने खूब गाना बजाना किया था। इस सब बातों से सिद्ध होता हे कि वे मिली-जुली संस्कृति पर विश्वास करती थीं।

Question 21.

टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही? इस संदर्भ में दादी के स्वभाव की किन्हीं चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

Answer:

टोपी को अपनी दादी से कभी अपनापन नहीं मिला था, वे उसे बात-बात पर अपमानित करती रहती थीं, जबकि इफ़्फ़न की दादी से भरपूर दुलार मिलता था और उनका एक-एक शब्द उसे शक्कर का खिलौना प्रतीत होता था। इसी कारण उसने दादी बदलने की बात कही। इस संदर्भ में इफ़्फ़न की दादी की चार विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) वे बहुत उदार विचारों की थीं।
(*ii*) वे बहुत मृदुभाषी थीं।
(*iii*) उनके मन में जाति-पाँति का भेदभाव न था।
(*iv*) उनका मन ममत्व से परिपूर्ण था।

Question 22.

इफ़्फ़न की दादी एक ज़मींदार की बेटी थीं। अपने ससुराल के वातावरण में अपने को ढालने में उन्हें किन असुविधाओं का सामना करना पड़ा? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

इफ़्फ़न की दादी एक ज़मींदार की बेटी थीं। उनके मायके में सभी बहुत उदार थे। धार्मिक कट्टरता कहीं दूर-दूर तक नहीं थी, जबकि उनकी ससुराल का वातावरण धार्मिक कट्टरता से भरा था। यहाँ खाने-पीने से लेकर रीति-रिवाजों की पाबंदी थी। वे अपने मायके में खूब घी पिलाई काली हाँडी में जमाई गई दही जी भरकर खा लेती थीं, किंतु मौलवी परिवार में वे ऐसा नहीं कर पाती थीं। वे पूरबी बोलती थीं, जबकि मौलवी परिवार में उर्दू बोली जाती थी तथा पूरबी बोली को अनपढ़ व गँवारों की भाषा माना जाता था। इसी कारण ससुराल में उनकी आत्मा सदा बेचैन रही तथा वहाँ के वातावरण में वे कभी पूरी तरह नहीं ढल सकीं।

Question 23.

इफ़्फ़न की दादी की मौत के बाद टोपी को उसका घर खाली-सा क्यों लगा? कारण सहित उत्तर दीजिए।

Answer:

टोपी को अपनी दादी से कभी अपनापन नहीं मिला था, वे उसे बात-बात पर अपमानित करती रहती थीं, जबकि इफ़्फ़न की दादी से उसे भरपूर दुलार मिलता था और उनका एक-एक शब्द उसे शक्कर का खिलौना प्रतीत होता था। वह इफ़्फ़न के घर जाकर उन्हीं के पास बैठता था तथा अपनत्व व ममता का असीम सुख प्राप्त किया करता था। इसी आत्मिक लगाव के कारण इफ़्फ़न की दादी की मौत के बाद टोपी को उसका घर खाली-खाली-सा लगा।

Question 24.

टोपी ने इफ़्फ़न को दादी बदलने की बात क्यों कही? कारण-सहित उत्तर दीजिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी स्नेहिल स्वभाव की थी। वह बच्चों से अत्यधिक स्नेह करती थीं। वह इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी अपने पास बैठाकर कहानियाँ सुनाती थीं। यहाँ तक कि इफ़्फ़न के परिवार का कोई सदस्य कभी टोपी को उसकी बोली पर छेड़ता जब भी वह टोपी का ही पक्ष लेती थीं। टोपी की भाँति वह भी पूरबी बोली बोलती थीं जिससे टोपी को उनसे अपनेपन का एहसास होता था। जबकि टोपी की दादी का स्वभाव अच्छा न था। वह हमेशा टोपी को डाँटती-फटकारती रहती थीं। वह परंपराओं में बँधे होने के कारण कट्टर हिंदू थीं। वह टोपी को इफ़्फ़न के घर जाने से भी रोकती थीं। इन्हीं सब कारणों से टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही।

Question 25.

टोपी पढ़ने में बहुत तेज़ था, फिर भी वह दो बार फ़ेल हो गया। उसकी पढ़ाई में क्या बाधाएँ आ जाती थीं?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

टोपी पढ़ने में बहुत तेज़ था, फिर भी वह दो बार फ़ेल हो गया क्योंकि पहले साल उसे पढ़ने ही नहीं दिया गया। वह जब भी पढ़ने बैठता, उसके बड़े भाई मुन्नी बाबू को कोई काम निकल आता था या उसकी माँ रामदुलारी को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती थी, जो घर के नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी और रही सही कसर उसका छोटा भाई भैरव उसकी कॉपियों के पन्नों से हवाई जहाज़ बनाकर पूरा कर डालता था तथा दूसरे वर्ष परीक्षा के दिनों में उसे टाइफ़ाइड हो गया था।

Question 26.

टोपी को अध्यापक घृणा की दृष्टि से क्यों देखते थे? अंग्रेज़ी के अध्यापक ने उसे एक दिन क्या कहकर अनुत्साहित किया और क्यों?

Answer:

टोपी के अध्यापक उसके नवीं कक्षा में फ़ेल हो जाने के कारण उसे बुद्धू समझने लगे थे। उन्होंने एक सच्चे अध्यापक का कर्तव्य निभाते हुए उसकी परेशानियों को समझकर उन्हें दूर करने का प्रयास नहीं किया, बल्कि उससे चिढ़कर घृणा करने लगे। उनके मन में टोपी के प्रति ज़रा-सी भी सहानुभूति नहीं थी। अंग्रेज़ी के अध्यापक ने एक बार उसे यह कहकर अनुत्साहित किया कि वह जवाब देने के लिए हाथ न उठाए, वह दो साल से यही पुस्तक पढ़ रहा है, तो उसे तो सारे जवाब ज़बानी याद हो गए होंगे, उसके सहपाठियों को अगले वर्ष हाईस्कूल का इम्तिहान देना है, उससे तो वे अगले साल भी पूछ लेंगे। ऐसा उन्होंने इसलिए किया क्योंकि वे एक अच्छे अध्यापक नहीं थे, वे टोपी से घृणा करते थे और टोपी के द्वारा बार-बार उत्तर देने के लिए हाथ उठाने से वे झल्लाहट से भर उठे थे।

Question 27.

'अपने वे होते हैं जिनसे अपनापन मिले।'– इस कथन के आधार पर दादी के प्रति इफ़्फ़न के लगाव पर सोदाहरण प्रकाश डालिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

यह कथन बिल्कुल सही है कि अपने वे होते हैं, जिनसे अपनापन मिले। यदि देखा जाए तो इफ़्फ़न के पूरे परिवार में सभी का व्यवहार उसके प्रति कभी-कभी कठोर हो जाता था। अम्मी और बाजी उसे कभी कभार डाँट-फटकार लेती थीं, उसकी छोटी बहन नुज़हत उसकी कॉपी-किताबों पर तस्वीरें बनाने लगती थी और उसके अब्बू घर को कचहरी समझकर फ़ैसला सुना देते थे, इस प्रकार घर का हर सदस्य जाने-अनजाने उसके दिल को ठेस पहुँचा देता था, किंतु एक दादी ही थीं, जिन्होंने कभी उसका दिल नहीं दुखाया था और वे बड़े अपनत्व से उसे अपने पास बैठाकर हातिमताई, गुलबकाबली, बहराम डाकू, अनार परी, अमीर हमज़ा, बारह बुर्ज़, पंच फुल्ला रानी की कहानियाँ सुनाया करती थीं। इस प्रकार इफ़्फ़न प्यार तो अपनी अम्मी, बाजी, छोटी बहन नुज़हत व अपने अब्बू सभी से करता था पर उसे सबसे अधिक प्रेम अपनी दादी से ही था क्योंकि सबसे अधिक अपनापन उसे दादी से ही तो मिलता था।

Question 28.

कैसे कहा जा सकता है कि टोपी शुक्ला जैसा कोमल मन का बालक सामाजिक सद्भाव को बनाने में बड़ों की अपेक्षा अधिक सफल हो सकता है? 'अम्मी' शब्द के प्रयोग की घटना के आधार पर प्रस्तुत कथन की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

Answer:

'अम्मी' शब्द के प्रयोग पर टोपी के घरवालों की बड़ी ही कट्टरवादी प्रतिक्रिया हुई थी। सभी भोजन करना छोड़कर टोपी की ओर देखने लगे थे। उसकी परंपरावादी, कट्टर दादी ने इसे घर की परंपराओं और संस्कारों का अपमान माना था और वे खाने की मेज़ से उठकर चली गईं थीं और जब टोपी की माँ रामदुलारी को यह पता चला था कि टोपी ने किसी मुसलमान लड़के से दोस्ती कर ली है, तो उसने टोपी की बहुत बुरी तरह पिटाई की थी। इस प्रसंग में टोपी के साथ उसकी दादी और उसकी माँ रामदुलारी की जो बातचीत हुई थी, उसमें टोपी के कोमल मन की सामाजिक संवेदना स्पष्ट झलकती है। उसका कोमल मन भाषा में भेद नहीं करता, उसके लिए 'माँ' और 'अम्मी' शब्द में अंतर नहीं है। माँ के पूछने पर कि यह शब्द उसने किससे सीखा, वह बेहिचक 'इफ़्फ़न' का नाम बताता है और पिटाई के बावजूद यह स्वीकार नहीं करता कि वह इफ़्फ़न के घर नहीं जाएगा। वास्तव में, टोपी का सामाजिक सद्भाव बड़ों को आईना दिखाता है। बड़े जिस सामाजिक सद्भावना को सहजता से स्वीकार नहीं कर पाते, उसी को टोपी जैसा बालक पारिवारिक उपेक्षा झेलकर भी स्वीकार करता है और उसके समर्थन में अपनी आवाज़ बुलंद करता है। इस प्रसंग से यह सीख भी मिलती है कि ऐसी सद्भावना यदि प्रत्येक बच्चे के अंदर आ जाए, तो देश से सांप्रदायिक उन्माद की स्थिति समाप्त होते देर नहीं लगेगी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 29.

टोपी और इफ़्फ़न की परंपराएँ, सोच अलग-अलग थी फिर भी उन दोनों में इतना मेल क्यों था? कारण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

Answer:

सच्ची मित्रता का संबंध परंपराओं या अलग सोच से न होकर मन से होता है। टोपी और इफ़्फ़न के मनों में भी उदारता थी, दोनों ने अपने-अपने घरों की कट्टरता से परे रहकर एक-दूसरे को मित्र बनाया। वास्तव में, धार्मिक उन्माद से बालमन का कुछ भी लेना-देना नहीं होता। उसके लिए इंसानियत ही सब कुछ होती है। यही कारण है कि टोपी और इफ़्फ़न की परंपराएँ, सोच अलग-अलग थी फिर भी उन दोनों में इतना मेल था और इसी कारण दोनों एक-दूसरे के बिना अधूरे दिखाई देते हैं और यहाँ तक कि इफ़्फ़न के पिता जी के तबादले के बाद टोपी भावात्मक रूप से टूट जाता है।

Question 30.

'इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम विचाराधारा की तरह हिंदू विचारधारा से भी प्रभावित थीं' उदाहरण-सहित स्पष्ट कीजिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी मिली-जुली संस्कृति में विश्वास रखने वाली महिला थीं। वह नमाज़ व रोज़े की पाबंद थीं, किंतु हिंदू पूजा-पद्धति से भी घृणा नहीं करती थीं। इसी कारण जब एक बार इफ़्फ़न के पिता जी के चेचक निकली, तो वे एक पैर पर खड़े होकर बोलीं, "माता, मोरे बच्चे को माफ़ करद्यो" उन्होंने अपने बेटे की शादी में भी गाना-बजाना चाहा, किंतु मौलवी साहब की कट्टरता के कारण ऐसा नहीं कर सकीं, लेकिन मौलवी साहब के इंतकाल के बाद इफ़्फ़न की छठी पर उन्होंने ख़ूब गाना-बजाना करवाया। इन बातों से सिद्ध होता है कि इफ़्फ़न की दादी मुस्लिम विचारधारा की तरह हिंदू विचारधारा से भी प्रभावित थीं।

Question 31.

टोपी द्वारा 'अम्मी' शब्द के प्रयोग करने पर उसके घर वालों की क्या प्रतिक्रिया हुई? प्रतिक्रिया के औचित्य-अनौचित्य को तर्कों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

'अम्मी' शब्द के प्रयोग पर टोपी के घरवालों की बड़ी ही कट्टरवादी प्रतिक्रिया हुई। सभी भोजन करना छोड़कर टोपी की ओर देखने लगें। उसकी परंपरावादी, कट्टर दादी ने इसे घर की परंपराओं और संस्कारों का अपमान माना और वे खाने की मेज़ से उठकर चली गईं। तथा जब टोपी की माँ रामदुलारी को यह पता चला कि टोपी ने किसी मुसलमान लड़के से दोस्ती कर ली है, तो उसने टोपी की बहुत बुरी तरह पिटाई की। यह प्रतिक्रिया बिल्कुल भी उचित नहीं थी। इस प्रतिक्रिया से पता चलता है कि टोपी का परिवार बहुत ही कट्टरवादी ब्राह्मण परिवार था और उनके अंदर धार्मिक कट्टरता इस रूप में भरी थी कि वे उर्दू परंपरा से जुड़े इस पवित्र संबोधन शब्द को भी स्वीकार नहीं कर सके। ऐसी मानसिकता के व्यक्ति सामाजिक समरसता के मूल्यों से अनभिज्ञ होते हैं। वे यह नहीं सोचते कि समाज के सच्चे विकास के लिए कट्टरता नहीं, बल्कि सामाजिक व सांप्रदायिक सौहार्द अधिक उपयोगी है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

Question 32.

टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे पर अनजान और अटूट रिश्ते में बँधे थे। मानवीय मूल्यों की दृष्टि से ये अटूट रिश्ते भारत के उस समाज के लिए अनुकरणीय आदर्श बन सकते हैं जो मज़हब और जाति को सब कुछ समझते हैं। तर्क सहित टिप्पणी कीजिए।

Answer:

टोपी और इफ़्फ़न की दादी अपने-अपने परिवारों में उपेक्षा से भरा जीवन बिता रहे थे। कट्टर ब्राह्मण परिवार से संबंध रखने वाले टोपी को घर में न तो भाइयों से स्नेह मिलता था और न ही दादी व माँ से ममता। यहाँ तक कि परिवार में उसके अन्य दोनों भाइयों की तुलना में उसके साथ पक्षपात किया जाता था, उधर इफ़्फ़न के कट्टर मौलवी परिवार में दादी की पूरबी बोली के कारण बहुत अच्छी स्थिति नहीं थी। परंतु जब टोपी इफ़्फ़न के घर गया और वहाँ जाकर दादी के पास बैठा। तो उसे उनकी बोली में ममता की मिठास दिखाई दी। दादी का एक-एक शब्द उसे शक्कर का खिलौना प्रतीत हुआ और दूसरी ओर दादी को भी इस अबोध बालक की निकटता में अपनेपन का भाव दिखाई दिया और वे दोनों अनजान अटूट रिश्ते से बँध गए।

मानवीय मूल्यों की दृष्टि से ये अटूट रिश्ते भारत के उस समाज के लिए अनुकरणीय बन सकते हैं जो मज़हब और जाति को सब कुछ समझते हैं क्योंकि ऐसे रिश्तों से समाज में जाति-पाँति के स्थान पर इंसानियत फलेगी-फूलेगी तथा मज़हब के नाम पर लोग एक-दूसरे के खून के प्यासे नहीं रहेंगे। भाईचारे और सांप्रदायिक सौहार्द के वातावरण में देश का सच्चा विकास होगा।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 33.

एक ही कक्षा में समझदार छात्र के दो बार फ़ेल हो जाने से उसकी मानसिकता पर क्या प्रभाव पड़ता है? टोपी की आपबीती किन जीवन-मूल्यों की कमी की ओर संकेत करती है? इस समस्या के सुधार के लिए तर्कसम्मत सुझाव दीजिए।

Answer:

एक ही कक्षा में समझदार छात्र के दो बार फ़ेल होने पर उसका मन निराशा, अवसाद आदि से भर उठता है। ऐसे में उसे सबसे ज़्यादा जरूरत परिवार, अध्यापक तथा सहपाठियों के सहयोग की होती है। यदि उसे इनका सहयोग मिलता है, तो वह निराशा तथा अवसाद से निकल जाता है। किंतु टोपी के साथ किसी ने भी सहयोग नहीं किया और कक्षा में नए सहपाठियों से उसकी दोस्ती नहीं हो सकी। अध्यापकों की सहानुभूति के स्थान पर उसे सदा उपेक्षा ही मिली। इन्हीं कारणों से वह घर की तरह स्कूल में भी अकेला महसूस करने लगा। टोपी की यह आपबीती समाज में बच्चों के बीच घटती संवेदनशीलता व सहयोग की भावना तथा बढ़ती ईर्ष्या, द्वेष आदि बुराइयों की ओर संकेत करती है इस समस्या के सुधार के लिए बच्चों को नैतिक मूल्यों से जुड़ी कहानियाँ, प्रेरक प्रसंग आदि सुनाने चाहिए तथा अन्य बच्चों को ऐसे बच्चों के प्रति उदार व संवेदनशील बनने की सलाह देनी चाहिए। उन्हें यह बताया जाना चाहिए कि उनका थोड़ा-सा सहयोग ऐसे बच्चों को जीवन में सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

Question 34.

'अम्मी' शब्द के प्रयोग पर टोपी के घर वालों की जो प्रतिक्रिया हुई उस पर सामाजिक समरसता के मूल्यों की दृष्टि से टिप्पणी कीजिए और स्पष्ट कीजिए कि भाषा को किसी धर्म या संप्रदाय से जोड़ना क्यों उचित नहीं है?

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

'अम्मी' शब्द के प्रयोग पर टोपी के घरवालों की बड़ी ही कट्टरवादी प्रतिक्रिया हुई। सभी भोजन करना छोड़कर टोपी की ओर देखने लगे। उसकी परंपरावादी, कट्टर दादी ने इस घर की परंपराओं और संस्कारों का अपमान माना और वे खाने की मेज़ से उठकर चली गईं तथा जब टोपी की माँ रामदुलारी को यह पता चला कि टोपी ने किसी मुसलमान लड़के से दोस्ती कर ली है, तो उसने टोपी की बहुत बुरी तरह पिटाई की। इस प्रतिक्रिया से पता चलता है कि टोपी का परिवार बहुत ही कट्टवादी ब्राह्मण परिवार था और उनके अंदर धार्मिक कट्टरता इस रूप में भरी थी कि वे उर्दू परंपरा से जुड़े माँ के लिए प्रयुक्त इस पवित्र संबोधन शब्द को भी स्वीकार नहीं कर सके। ऐसी मानसिकता के व्यक्ति सामाजिक समरसता के मूल्यों से अनभिज्ञ होते हैं। वे यह नहीं सोचते कि समाज के सच्चे विकास के लिए कट्टरता नहीं, बल्कि सामाजिक व सांप्रदायिक सौहार्द अधिक उपयोगी है। मेरे विचार में भाषा किसी एक धर्म की नहीं, बल्कि संपूर्ण समाज की धरोहर होती है। अतः हर व्यक्ति को इसे सहेजकर रखना व इसके प्रयोग के प्रति उदार होना चाहिए क्योंकि भाषा मानवता के प्रसार का संदेश देती है, केवल एक धर्म की परिधि में सिमटकर बैठे रहने का नहीं।

Question 35.

5. टोपी मुन्नी बाबू की किस असलियत से परिचित था? उसने इसके बारे में घरवालों को जानकारी क्यों नहीं दी? यह भी बताइए कि मुन्नी बाबू से टोपी की अनबन होने का क्या कारण था?

Answer:

टोपी मुन्नी बाबू की इस असलियत से परिचित था कि वे कबाब खाते हैं क्योंकि उसने एक बार मुन्नी बाबू को रहीम कबाबची की दुकान पर कबाब खाते हुए देख लिया था। इसके लिए मुन्नी बाबू ने उसे इकन्नी दी थी कि वह यह बात घर जाकर न कहे। ऐसा नहीं है कि टोपी ने इकन्नी को रिश्वत के रूप में स्वीकार करके मुन्नी बाबू की असलियत को घरवालों से छिपाकर रखा था, बल्कि बात यह थी कि वह भ्रातृभाव व भोलेपन के कारण मुन्नी बाबू की चुगली नहीं कर सका था। मुन्नी बहुत चतुर था। इस कारण जब 'अम्मी' संबोधन पर दादी ने टोपी को डाँटना शुरू किया, तो उसको लगा कि कहीं टोपी कबाब वाली बात दादी को न बता दे। इसी कारण उसने पहले ही झूठा आरोप टोपी पर लगा दिया कि उसने टोपी को एक दिन कबाब खाते हुए देखा है। यह आरोप सरासर झूठ था, जिसका टोपी विरोध कर रहा था। इसी कारण मुन्नी बाबू और टोपी में अनबन हुई थी।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Question 36.

"बालमन 'स्वार्थ' से चलायमान न होकर 'अपनेपन' से चलायमान होता है। यही अपनापन मानव-मानव के मध्य सद्भाव का जनक माना जाता है।" टोपी शुक्ला का इफ़्फ़न की दादी एवं घर की नौकरानी सीता के साथ संबंधों के परिप्रेक्ष्य में उपर्युक्त कथन की विवेचना कीजिए।

Answer:

"बालमन 'स्वार्थ' से चलायमान न होकर 'अपनेपन' से चलायमान होता है। यही अपनापन मानव-मानव के मध्य सद्भाव का जनक माना जाता है।" बालमन को जहाँ भी अपनत्व मिलता है, वह उसी की ओर खिंचा चला जाता है। यदि टोपी को यही अपनापन अपनी दादी से मिलता, तो वह उनसे भी उतना ही प्रेम करता, जितना वह इफ़्फ़न की दादी से करता था। इफ़्फ़न की दादी के पास बैठते ही उसे ममता व दुलार की अनुभूति होने लगती थी। यहाँ दादी से उसे भरपूर दुलार मिलता था और उनका एक-एक शब्द उसे शक्कर का खिलौना, अमावट व तिल का लड्डू प्रतीत होता था। ऐसा ही ममत्व उसे घर की बूढ़ी नौकरानी सीता से भी मिलता था, जब भी उसे घर के उपेक्षापूर्ण वातावरण से ठेस लगती थी, तब सीता के आँचल में जाकर उसे अपनत्व का संबल मिल जाता था। यही कारण है कि वह इफ़्फ़न की दादी और बूढ़ी नौकरानी सीता का हृदय से सम्मान करता था।

2012
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 37.

इफ़्फ़न को 'टोपी शुक्ला' कहानी का महत्त्वपूर्ण पात्र कैसे माना जा सकता है?

Answer:

इफ़्फ़न 'टोपी शुक्ला' कहानी का अत्यंत महत्त्वपूर्ण पात्र माना जा सकता है क्योंकि लेखक ने कहानी के आरंभ में ही यह स्पष्ट कर दिया था कि इफ़्फ़न के बिना टोपी और टोपी के बिना इफ़्फ़न दोनों अधूरे हैं। इफ़्फ़न टोपी का पहला और घनिष्ठ मित्र था। टोपी अपने दिल की सारी बात इफ़्फ़न से ही कहता था। अपने परिवार के विरोध के बावजूद टोपी ने इफ़्फ़न के घर जाना नहीं छोड़ा था।

उपर्युक्त बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि इफ़्फ़न इस कहानी का प्रमुख पात्र है।

Question 38.

'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर लिखिए कि टोपी और इफ़्फ़न की दादी अलग-अलग मज़हब और जाति के थे फिर भी एक अनजान अटूट रिश्ते से क्यों बँधे थे।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

लेखक के अनुसार टोपी हिंदू परिवार का था और इफ़्फ़न की दादी मुसलमान थीं, फिर भी टोपी और इफ़्फ़न की दादी एक अटूट रिश्ते से बँधे थे। 'टोपी' आठ वर्ष का था और इफ़्फ़न की दादी 72 वर्ष की थी फिर भी दोनों को एक दूसरे से असीम लगाव था। एक दूसरे के बिना दोनों अकेलापन महसूस करते थे क्योंकि उन दोनों की भावनाओं को उनके परिवार वाले नहीं समझते थे। टोपी को इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता था कि इफ़्फ़न की दादी दूसरे धर्म की थीं। उन दोनों का रिश्ता धर्म-मज़हब, जाति-भाषा के बंधन से मुक्त था। इफ़्फ़न की दादी टोपी को तरह-तरह की कहानियाँ जैसे परियों की कहानियाँ, राजा-रानी व डाकुओं की कहानियाँ, बारह बुर्ज व अन्य रहस्यमयी कहानियाँ सुनाती थीं। इफ़्फ़न की दादी की मृत्यु का समाचार सुनकर टोपी जिमनेजियम के एक कोने में बैठकर रोने लगा। उस समाचार को सुनकर टोपी को गहरा सदमा लगा था।

टोपी और इफ़्फ़न की दादी में एक अंजान व अटूट रिश्ता था। दोनों एक दूसरे के बिना अधूरे थे। एक आठ बरस का था तो दूसरी बहत्तर वर्ष की। अपने-अपने परिवार में दोनों बहुत अकेलापन महसूस करते थे। इफ़्फ़न की दादी 'टोपी' को भी इफ़्फ़न की तरह प्रेम करती थी। उन दोनों का रिश्ता धर्म-मज़हब, जाति-भाषा के बंधन से मुक्त था।

Question 39.

टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही? स्पष्ट कीजिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी स्नेहिल स्वभाव की थी। वह बच्चों से अत्यधिक स्नेह करती थीं। वह इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी अपने पास बैठाकर कहानियाँ सुनाती थीं। यहाँ तक कि इफ़्फ़न के परिवार का कोई सदस्य कभी टोपी को उसकी बोली पर छेड़ता जब भी वह टोपी का ही पक्ष लेती थीं। टोपी की भाँति वह भी पूरबी बोली बोलती थीं जिससे टोपी को उनसे अपनेपन का एहसास होता था। जबकि टोपी की दादी का स्वभाव अच्छा न था। वह हमेशा टोपी को डाँटती-फटकारती रहती थीं। वह परंपराओं में बँधे होने के कारण कट्टर हिंदू थीं। वह टोपी को इफ़्फ़न के घर जाने से भी रोकती थीं। इन्हीं सब कारणों से टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही।

Question 40.

'अम्मी' शब्द पर टोपी के घरवालों की क्या प्रतिक्रिया हुई और क्यों?

Answer:

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

'अम्मी' शब्द के प्रयोग पर टोपी के घरवालों की बड़ी ही कट्टरवादी प्रतिक्रिया हुई। सभी भोजन करना छोड़कर टोपी की ओर देखने लगे। उसकी परंपरावादी, कट्टर दादी ने इस घर की परंपराओं और संस्कारों का अपमान माना और वे खाने की मेज़ से उठकरक चली गई तथा जब टोपी की माँ रामदुलारी को यह

पता चला कि टोपी ने किसी मुसलमान लड़के से दोस्ती कर ली है, तो उसने टोपी की बहुत बुरी तरह पिटाई की। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि टोपी का परिवार बहुत ही कट्टरवादी ब्राह्मण परिवार था और उनके अंदर धार्मिक कट्टरता कूट-कूट कर भरी थी।

2011
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 41.

टोपी शुक्ला इफ़्फ़न के परिवार से क्यों अधिक हिला-मिला था?

Answer:

टोपी अपने भरे पूरे घर में सबके होते हुए भी अकेला महसूस करता था। इफ़्फ़न से उसकी गहरी मित्रता थी। टोपी अपने सारे दुख इफ़्फ़न से बाँटता था। टोपी को इफ़्फ़न की दादी भी बहुत अच्छी लगती थीं जो उन्हें कई कहानियाँ सुनाया करती थीं तथा उससे बहुत स्नेह से बात करती थीं। टोपी को वहाँ बहुत अपनापन मिलता था। इसी अपनेपन के कारण वह इफ़्फ़न के परिवार से बहुत हिला-मिला था।

Question 42.

अपने बेटे की शादी में गाने-बजाने की दादी की इच्छा पूरी क्यों नहीं हो पाई? 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर लिखिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी के पति एक मौलवी थे और मौलवी के घर गाना-बजाना नहीं हो सकता था। दादी के अनुसार उनके पति हर अवसर पर बस मौलवी ही बने रहते थे। यही कारण था कि वे अपने बेटे की शादी में गाना-बजाना नहीं कर पाईं।

Question 43.

दादी के अलावा घर के अन्य लोगों का इफ़्फ़न के साथ कैसा व्यवहार था? 'टोपी शुक्ला' के आधार पर बताइए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

दादी के अलावा घर के अन्य लोगों का इफ़्फ़न के साथ व्यवहार अत्यंत सामान्य था। उसकी अम्मी और उसकी बाजी उसे कभी-कभार डाँट मार देती थीं। उसकी बाजी नुज़हत को जब भी मौका मिलता, वह इफ़्फ़न की कॉपियों पर तस्वीरें बनाने लगतीं। अब्बू भी कभी-कभार घर को कचहरी समझकर फ़ैसला सुनाया करते थे। केवल दादी ही कभी उसका दिल नहीं दुखाती थी।

Question 44.

'अम्मी' शब्द पर टोपी के घर वालों की क्या प्रतिक्रिया हुई और क्यों?

Answer:

'अम्मी' शब्द के प्रयोग पर टोपी के घरवालों की बड़ी ही कट्टरवादी प्रतिक्रिया हुई। सभी भोजन करना छोड़कर टोपी की ओर देखने लगे। उसकी परंपरावादी, कट्टर दादी ने इस घर की परंपराओं और संस्कारों का अपमान माना और वे खाने की मेज़ से उठकरक चली गई तथा जब टोपी की माँ रामदुलारी को यह

पता चला कि टोपी ने किसी मुसलमान लड़के से दोस्ती कर ली है, तो उसने टोपी की बहुत बुरी तरह पिटाई की। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि टोपी का परिवार बहुत ही कट्टरवादी ब्राह्मण परिवार था और उनके अंदर धार्मिक कट्टरता कूट-कूट कर भरी थी।

Question 45.

ज़हीन होने पर भी टोपी शुक्ला के एक ही कक्षा में दो बार फ़ेल होने के कारणों पर प्रकाश डालिए।

Answer:

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फ़ेल हो गया। एक बार वह घर के कामों की वज़ह से नहीं पढ़ पाया। जब भी टोपी पढ़ने बैठता तभी मुन्नी बाबू को कोई-न-कोई काम निकल आता। टोपी की माँ रामदुलारी भी उससे कोई-न-कोई चीज़ मँगवाती रहती थीं। दूसरे साल भी वह इसलिए फ़ेल हो गया क्योंकि वह बुरी तरह बीमार पड़ गया था। उसे टाइफ़ाइड हो गया था।

Question 46.

टोपी ने दुबारा कलेक्टर साहब के बँगले की ओर रुख क्यों नहीं किया? 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर लिखिए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

Answer:

दुबारा टोपी कलेक्टर साहब के बँगले की ओर नहीं गया क्योंकि नए कलेक्टर साहब के बेटों ने टोपी को अपने कुत्ते से कटवा दिया था और टोपी को पेट में 14 (चौदह) इंजेक्शन लगवाने पड़े थे तथा कलेक्टर के बेटों ने टोपी को मारा भी था।

Question 47.

इफ़्फ़न के घर जाने के लिए मना करने पर भी टोपी नहीं माना और पिटता रहा। क्यों? अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

टोपी एक सुविधा-संपन्न परिवार से था, फिर भी इफ़्फ़न की हवेली की तरफ़ वह बरबस खिंचा चला जाता था क्योंकि अपने भरे-पूरे घर में वह बिल्कुल अकेला था। उसकी भावनाओं को घर में कोई नहीं समझता था। दादी तो उसकी हर बात में कमी निकालती थीं। दादी उसकी भाषा पर भी उसे डाँटती थीं। माँ को उसकी इफ़्फ़न से दोस्ती पर नाराज़गी थी। बड़े भाई मुन्नी बाबू ने भी स्वयं कबाब खाकर उसका इल्ज़ाम टोपी पर लगाकर उसकी पिटाई करवा दी थी। छोटा भाई भैरव भी अक्सर उसे तंग करता रहता था। इन सबके विपरीत इफ़्फ़न और उसकी दादी से उसे अपनेपन का एहसास मिलता था। दादी तो उसे बहुत प्यार करती थी। वह जब भी इफ़्फ़न के घर जाता, दादी के पास ही बैठता था। टोपी की पूरबी बोली पर यदि इफ़्फ़न के परिवार का कोई सदस्य उसे छेड़ता, तो भी दादी टोपी का ही पक्ष लेती थीं। वे स्वयं भी पूरबी बोली बोलती थीं और इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी कहानियाँ सुनाया करती थीं। इसी कारण टोपी ने बार-बार मना करने पर भी इफ़्फ़न की हवेली में जाना नहीं छोड़ा।

Question 48.

किन बातों से पता चलता है कि इफ़्फ़न की दादी एक ज़मींदार की बेटी थीं? 'टोपी शुक्ला' पाठ के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी एक ज़मींदार घर की बेटी थीं, जहाँ दूध, दही, घी, मक्खन आदि किसी चीज़ की कोई कमी नहीं थी। उन्हें वहाँ गाने-बजाने की भी पूरी स्वतंत्रता थी। उनके मायके का घर कस्टोडियन में चला गया था क्योंकि अब उनके घर का कोई वारिस नहीं था। इन बातों से पता चलता है कि दादी जमींदार की बेटी थीं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

2010
लघुत्तरात्मक प्रश्न

Question 49.

टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही? 'टोपी शुक्ला' के आधार पर लिखिए।

Answer:

इफ़्फ़न की दादी स्नेहिल स्वभाव की थी। वह बच्चों से अत्यधिक स्नेह करती थीं। वह इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी अपने पास बैठाकर कहानियाँ सुनाती थीं। यहाँ तक कि इफ़्फ़न के परिवार का कोई सदस्य कभी टोपी को उसकी बोली पर छेड़ता जब भी वह टोपी का ही पक्ष लेती थीं। टोपी की भाँति वह भी पूरबी बोली बोलती थीं जिससे टोपी को उनसे अपनेपन का एहसास होता था। जबकि टोपी की दादी का स्वभाव अच्छा न था। वह हमेशा टोपी को डाँटती-फटकारती रहती थीं। वह परंपराओं में बँधे होने के कारण कट्टर हिंदू थीं। वह टोपी को इफ़्फ़न के घर जाने से भी रोकती थीं। इन्हीं सब कारणों से टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात कही।

Question 50.

कलेक्टर साहब के लड़के टोपी के दोस्त क्यों नहीं बन सके?

Answer:

कलेक्टर साहब के लड़के टोपी के दोस्त इसलिए नहीं बन सके क्योंकि वे तीनों बहुत घमंडी थे। उन्हें अपने पिता के पद तथा आर्थिक स्थिति पर गुमान था। वे बार-बार जानबूझकर टोपी से उसके पिता के पद के विषय में पूछते थे और वह भी अपमानजनक भाषा में। एक बार तो उन्होंने टोपी पर अपना कुत्ता छोड़ दिया था। उन्हें मानवीय संबंधों और दोस्ती की गरिमा का बिलकुल ज्ञान नहीं था।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in